भक्ति, ज्ञान और जीवनमुक्ति की त्रिवेणी-माउण्ट आबू

ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों की तपोभूमि तथा धर्म और शौर्य का शिखर जहॉ ऋषियों ने तपस्या करके आध्यात्मिक शक्ति से पल्लवित किया है वही शौर्य के क्षेत्र में महाराणाप्रताप तथा अनेक वीरों ने अपने जान का बलिदान करके इस धरा को प्राचीन में अतातार्इयों से मुक्ति दिलायी है। ऐसी गाथा से परिपूर्ण तथा तन और मन की तपन को शीतलता प्रदान करने वाला भारत देश के पश्चिम में राजस्थान के रेगिस्तान में गुलशन खिलाने वाली अरावली की पर्वतमालाओं पर स्थित 'माउण्ट आबू' एक रमणीय तथा ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल है। यहाँ की अनेक पौराणिक कथायें तथा गाथायें किताबों तथा शास्त्रों के पन्नों में लिपटी हुई है।

माउण्ट आबू समुद्र तल से लगभग 4 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित है। तथा आबू रोड से 8 किमी. की दूरी से ही इसका आंचल शुरू हो जाता है। परन्तु इसके दिल तक पहुँचते-पहुँचते कुल दूरी 20 किमी. हो जाती है। यहाँ पहाड़ियों के वादियों में अनेक राजाओं के राजवाड़े की विरासत आज भी मौजूद है। यहाँ पर निवास करने वाले भील तथा गरासीयों के रूप में चिन्हित लोग भले ही आज उनकी प्राचीन विरासत धनाडयो के रूप में नहीं है परन्तु उनके रहन-सहन तथा उनके पगड़ी से लेकर उनके जूते तक राजाओं के पूर्व राजाई की सम्पन्नता की याद दिलाते है। माउण्ट आबू में विश्व प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल जैनियों का दिलवाड़ा मंदिर है। 1400 वर्ष पूर्व निर्मित यह मंदिर एक अकल्पनीय कलाओं से विभूषित है। यहाँ गुरूशिखर, गऊमुख, नक्की झील, अचलगढ़ के मंदिर आदि प्रमुख है जो लोगों के आकर्षण का केन्द्र बने रहते है। यहाँ का मौसम प्राय: गर्मी के दिनों में बहुत ही सुहावना होता है। यहाँ देशी और विदेशी पर्यटकों की आवक बहुतायत हो जाती है। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों के संख्या में दशकों का आवागमन होता है। हरी-भरी वादियों से सजा यह माउण्ट आबू प्राकृतिक सुन्दरता से भरपूर है।

अरावली का शिखर प्राचीन काल से धर्म और शौर्य के कारण चर्चित रहा ही है, परन्तु भौतिकता के युग में यहाँ आज भी ज्ञान की गंगा प्रवाहित होती है। जहाँ पर पूरे विश्व की मनुष्य आत्मायें आकर ज्ञान स्नान कर अपनी आन्तरिक क्षुधा को सुख-शान्ति और पवित्रता से सम्पन्न करके सोने के चिड़िया के रूप में प्रसिद्ध भारत की प्राचीन कल्पना को साकार करने की मार्ग पर अग्रसर होती है। यहाँ की सिखाये जाने वाला भारत का प्राचीन राजयोग का अनुसरण करने वालों के जीवन में एक चमत्कारिक परिवर्तन लाता है। शायद यही कारण है कि एक छोटे से बीज से शुरू होकर यह संस्था एक विराट वृक्ष का रूप धारण कर चुकी है। यहाँ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय है। जिसकी स्थापना सन् 1937 में हैदराबाद सिंध में ईश्वरीय शक्ति परमपिता परमात्मा शिव के निर्देशन में प्रजापिता ब्रह्मा (दादा लेखराज) के द्वारा हुई परन्तु भारत पाकिस्तान के विभाजन के बाद यह संस्था इश्वरीय निर्देशन के अनुसार तपस्वियों की तपस्या स्थली माउण्ट आबू में स्थापित हुई। प्रारम्भिक अवस्था में इस संस्था के अनुयाईयों की संख्या मात्र तीन सौ थी। जो आज पूरे विश्व के 130 देशों में अपने 8500 सेवाकेन्द्रों के माध्यम से मानव जगत में बढ़ रहे अत्याचार, भष्ट्राचार, जाति भेद, धर्मभेद, भाषा भेद, रंग भेद, सामाजिक कुरीतियों, शारीरिक और मानसिक रूप से पीड़ित मनुष्यात्माओं के दु:ख दर्द से मुक्ति दिलाकर सुख-

शान्ति सम्पन्न, एकता, अखण्डता तथा वसुधैव कुटुम्बकम की भावना की स्थापना में सतत प्रयत्नशील है। यहाँ मनाये जाने वाले पर्व तथा जयन्तियों का क्रियान्वयन आध्यात्मिक व्याख्यानों सहित किया तथा मनाया जाता है।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय के रूप में एक पाण्डव भवन तथा 'युनिवर्सल पीस हाल' का निर्माण किया गया है। यह वही स्थान है जहाँ पर संस्था के साकार प्रजापिता ब्रह्मा ने इस संस्था को विराट रूप देने के लिए अपने तपोबल से इसमें आत्माओं को अपने वास्तविक स्वरूप पहचानने का दिव्य नेत्र मिलता है। दो दशक पूर्व निर्मित युनविर्सल पीस हाल जिसमें 1600 लोगों के बैठने की व्यवस्था तथा 18 भाषाओं में ट्रांसलेशन की सुविधा से युक्त है।

ज्ञानसरोवर परिसर

इसके अलावा अरावली की पर्वतमालाओं से घिरे सालगांव स्थित राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, कार्यशालाओं तथा संगोष्ठियों के लिए 'सुखमय संसार के लिए बेहतर अकादमी' (एकेडमी फार ए बेटर वर्ल्ड) ज्ञान सरोवर का निर्माण किया गया है। अलग-अलग प्रभागों से सम्बन्धित लोगों के जीवन मे मूल्यों के समावेश हेतु 16 ट्रेनिंग सेन्टर का निर्माण किया गया है। यहाँ पर सभी वर्गों में मूल्यनिष्ठता तथा पारदर्शिता लाने के लिए समय-समय पर सम्मेलन तथा अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। यहाँ भौतिकता के चकाचौंध में आध्यात्मिकता और विज्ञान का सुन्दर सामंजस्य है। सूर्य की रोशनी का भरपूर उपयोग किया गया है। भोजन प्रणाली तथा गर्म पानी, चाय एवं दूध गर्म करने के लिए सौर उर्जा का उपयोग होता है। इसके अलावा आदिवासी तथा जनजातीय लोगों को मन को स्वस्थ बनाने के साथ-साथ तन को स्वस्थ बनाने के लिए आत्याधुनिक चिकित्सा प्रणाली के लिए ग्लोबल हास्पिटल तथा रिचर्स सेन्टर का निर्माण किया गया है। खेल कूद तथा मनोरंजन के लिए यहाँ का निर्मित पीस पार्क आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना रहता है।

ग्लोबल हास्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय मन को स्वस्थ रखने के लिए तो प्रयासरत है ही परन्तु यहाँ बसे ग्रामीण तथा आदिवासी लोगों को पूर्ण स्वस्थ रखने एवं समय-समय पर चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए एक ग्लोबल हास्पिटल तथा रिसर्च सेन्टर का निर्माण किया गया है। अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त यह हास्पिटल गरीबों तथा असहाय लोगों के लिए नि:शुल्क चिकित्सा प्रदान करता है। इसमें एलोपैथ, होमियो पैथ, आयुर्वेद, चुम्बकीय चिकित्सा तथा नेचुरोपैथी की चिकित्सा सुविधायें मौजूद है। इसमें विदेशों से चिकित्सकों से सुविधायें ली जाती है।

शान्तिवन

माउण्ट आबू की तलहटी में ब्रह्माकुमारीज संस्था का तिसरा काम्प्लेक्स 60 एकड़ में शान्तिवन परिसर का निर्माण किया गया है। यहाँ विश्व का सबसे बड़ा सौर उर्जा कुकिंग केन्द्र है जिसके द्वारा 35 हजार लोगों का भोजन सूर्य की रोशनी से कम समय में ही तैयार हो जाता है। इसके अलावा एशिया का सबसे बड़ा हाल जिसका नाम 'डायमंड हाल' है जिसमें 20 हजार लोगों के बैठने की व्यवस्था है। परिसर के अन्दर ही टेलिफोन, ट्रांसपोर्ट, पोस्ट

आफिस, बैंक एवं अत्यानुधिक सुविधाओं से सुसज्जित है। इस परिसर की आवासीय क्षमता 15 हजार है। यहाँ पूरे विश्व स्तर के बड़े पैमाने पर सम्मेलन तथा अन्य कार्यक्रम आयोजित होते रहते है।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्या प्रशासिका दादी प्रकाशमणि है। इनके सानिध्य में एक बेहतर समाज की स्थापना के लिए प्रतिवर्ष अनेक वर्गो के लिए सम्मेलन, सेमिनार, संगोष्ठियां, सर्व धर्म सम्मेलन, कार्यशालायें, प्रवचन, राजयोग शिविर, झांकियों तथा विभिन्न रैलियों एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है। इसमें आत्म विश्लेषण को प्राथमिकता दी जाती है। राजयोग की विधि से मनुष्य को उसके अतीत का परिचय कराकर उसे देवत्व स्थिति की ओर प्रेरित करता है। सात दशक पहले इस आध्यात्मिक क्रान्ति का उदय हुआ और आज देखते ही देखते एक विराट वृक्ष का रूप ले चुकी है लाखों की तादाद में लोग आत्म संयम, नियम से स्वयं को सशक्त बनाकर एक सुखी एवं शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे है। वर्तमान समय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की राजयोगिनी दादी जानकी जी मुख्य प्रशासिका है। इससे पूर्व संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणिजी का 25 अगस्त, 2008 को निधन हो गया था।

दादी जानकी के सानिध्य में 45 हजार ब्रह्माकुमारी बहने तथा 15 हजार युवा समर्पित रूप से अपने दिव्य जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में सतत प्रयत्नशील है। इसके साथ ही घर गृहस्थ में रहने वाले 9 लाख लोग पारिवारिक जीवन में रहते हुए श्रेष्ठ जीवन की प्रेरणा दे रहे हैं।

यही नहीं बल्कि सदियों से पुराणों किताबों और वेदों में वर्णित जीवनमुक्ति का भी विश्लेषण कराया जाता है जिसमें आत्मा शरीर में रहते भी शरीर से मुक्त जीवन मुक्ति का अनुभव करते है। यह एक ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही नहीं बल्कि एक 'संस्कार परिवर्तन' केन्द्र है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com